

कार्यकारी सारांश

विभिन्न क्षेत्रों के बीच जल उपलब्धता में असंतुलन को कम करने के लिए हमारे देश में अधिशेष जल वाले बेसिनों से जल की कमी वाले बेसिनों में जल का लंबी दूरी के अंतरबेसिन अंतरण पर विचार किया गया है। केन्द्रीय सिंचाई मंत्रालय (अब जल संसाधन मंत्रालय) और केन्द्रीय जल आयोग द्वारा वर्ष 1980 में देश की प्रायद्वीपीय नदियों और हिमालयी नदियों दोनों के संबंध में अनेक अंतरबेसिन जल अंतरण लिंकों की पहचान करते हुए एक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (एनपीपी) तैयार की गई थी। प्रायद्वीपीय नदी विकास और हिमालयी नदी विकास घटकों को एक साथ रखने से जल विद्युत क्षमता और अन्य लाभों के अलावा 35 मिलियन हेक्टेयर की अतिरिक्त सिंचाई क्षमता सृजित होने की उम्मीद थी।

तत्कालीन केन्द्रीय सिंचाई मंत्रालय (अब जल संसाधन मंत्रालय) और केन्द्रीय जल आयोग द्वारा वर्ष 1980 में तैयार की गई जल संसाधन विकास संबंधी राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के प्रायद्वीपीय नदी विकास घटक में महानदी बेसिन और गोदावरी बेसिन के अधिशेष प्रवाह को दक्षिण में कम जल वाले कृष्णा, पेन्नार, कावेरी, वैगई और गुंडार बेसिनों में पथांतरण करने परिकल्पना की गई थी। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (राजविअ) ने विभिन्न प्रायद्वीपीय नदी बेसिनों में अंतिम विकास परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए इन बेसिनों में जल संतुलन की स्थिति का आकलन किया है। इन अध्ययनों के आधार पर राजविअ ने महानदी-गोदावरी लिंक नहर के माध्यम से महानदी से वार्षिक रूप से 12165 मिमी³ जल के पथांतरण के प्रस्ताव तैयार किए हैं। गोदावरी से 26122 मिमी³ जल (महानदी से लाए गए जल सहित) को तीन लिंकों नामतः इंचमपल्ली, नागार्जुन सागर, इंचमपल्ली-पुलीचिंताला और पोलावरम-विजयवाड़ा के माध्यम से कृष्णा नदी में पथांतरित किए जाने की परिकल्पना की गई है। गोदावरी से लाए गए जल में से 14080 मिमी³ की मात्रा को तीन लिंक नहरों नामतः अलमट्टी-पेन्नार, श्रीसैलम-पेन्नार और नागार्जुनसागर-सोमासिला के माध्यम से कृष्णा से पेन्नार तक पथांतरित किए जाने की परिकल्पना की गई है। पेन्नार से 8565 मिमी³ जल की मात्रा को सोमासिला-ग्रांड एनीकट लिंक के माध्यम से कावेरी नदी की ओर मोड़ने का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त, तमिलनाडु राज्य में कावेरी नदी के नीचे गुंडार बेसिन तक पड़ने वाले क्षेत्र की मांगों को पूरा करने के लिए दक्षिण में कावेरी-वैगई-गुंडार लिंक नहर द्वारा 2252 मिमी³ जल की मात्रा को पथांतरित करने का प्रस्ताव है। यह रिपोर्ट कावेरी-वैगई-गुंडार लिंक प्रस्ताव की व्यवहार्यता रिपोर्ट से संबंधित है।

इस व्यवहार्यता रिपोर्ट को तैयार करने का उद्देश्य प्रस्तावों को ठोस रूप देने और पथांतरण की मात्रा, लागतों की हिस्सेदारी आदि पर व्यापक करार करने के लिए संबंधित राज्यों के बीच विचार-विमर्श को सुगम बनाना है।

कावेरी-वैगई-गुंडार लिंक परियोजना में कावेरी नदी के आर-पार मौजूदा कट्टालाई तल नियामक के अनुप्रवाह में राजविअ द्वारा प्रस्तावित कट्टालाई बैराज से 2252 मिमी³ जल के पथांतरण की परिकल्पना की गई है। लिंक को गुंडर नदी में आरडी 255.60 किमी पर समाप्त किया जाएगा।

कावेरी-वैगई-गुंडार लिंक नहर की कुल लंबाई 255.60 किलोमीटर है। यह नहर मौजूदा नई कट्टालाई उच्च स्तरीय नहर के समानांतर और आस-पास आरडी 36 किमी तक चलेगी और फिर गुंडर नदी में शामिल होने से पहले 219.60 किमी की दूरी तय करेगी।

लिंक नहर तमिलनाडु के करूर, तिरुचिरापल्ली, पुदुक्कोट्टई, शिवगंगा, रामनाथपुरम और विरुधुनगर जिलों से होकर गुजरती है, जो तिरुमानीमुतर, पोन्नानई (कावेरी बेसिन के दोनों उप-बेसिन) नदी घाटियों से होकर गुजरती है, जो कावेरी और वैगई के बीच धाराओं द्वारा शामिल किए गए क्षेत्र, वैगई बेसिन और वैगई और वैप्पार के बीच धाराओं द्वारा शामिल किए गए क्षेत्र से गुजरती है। कट्टालाई में एक नए बैराज को इच्छित पथांतरण के लिए नहर के उठान के रूप में उपयोग किए जाने का प्रस्ताव है।

लिंक नहर तमिलनाडु राज्य के करूर, तिरुचिरापल्ली, पुदुक्कोट्टई, शिवगंगा, रामनाथपुरम, विरुधुनगर और थूथुकुडी जिलों में 337717 हेक्टेयर के क्षेत्र में सिंचाई प्रदान करेगी। कृषि योग्य क्षेत्र की पहचान करने और भूमि की सिंचाई का पता लगाने के लिए, मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग संगठन, कृषि विभाग, तमिलनाडु सरकार द्वारा तैयार की गई मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग रिपोर्टों पर विचार किया जाता है। सिंचाई की सघनता 100% प्रस्तावित है। राजविअ द्वारा कमान क्षेत्र के लिए उपयुक्त एक फसल पैटर्न तैयार किया गया था। सिंचाई के लिए जल की आवश्यकता 1952.3 मिमी अनुमानित है।

सिंचाई के अलावा, कमान क्षेत्र में भावी घरेलू और औद्योगिक जल आवश्यकताओं की व्यवस्था करने का भी प्रस्ताव है। 2050 ईस्वी तक अनुमानित अतिरिक्त घरेलू और औद्योगिक आवश्यकताओं का अनुमान क्रमशः 62 मिमी³ और 123 मिमी³ है। लिंक नहर में पारेषण हानियां 114.7 मिमी होने का अनुमान है।

कावेरी-वैगई-गुंडर लिंक परियोजना में किसी बड़े बांध का निर्माण शामिल नहीं है, बल्कि इसमें केवल पथांतरण संरचना का निर्माण शामिल है। जिस क्षेत्र से होकर 255.60 किलोमीटर लंबी नहर गुजर रही है, उसे देखते हुए न तो पथांतरण संरचना के निर्माण और न ही लिंक नहर से कोई प्रतिकूल पर्यावरणीय प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। अतः व्यवहार्यता रिपोर्ट के स्तर पर विस्तृत पर्यावरणीय अध्ययन नहीं किया गया है। ये अध्ययन डीपीआर स्तर पर किए जाएंगे।

लिंक नहर संरक्षण किसी निर्मित क्षेत्र को पार नहीं करता है और इसलिए विस्थापित आबादी का कोई पुनर्वास एवं पुनः स्थापना प्रत्याशित नहीं है। कार्यान्वयन पर लिंक परियोजना निर्माण और रखरखाव चरण के दौरान स्थानीय आबादी के लिए बहुत सारे रोजगार के अवसर पैदा करेगी क्योंकि इस तरह क्षेत्र के लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

लिंक नहर को गोल कोनों के साथ समलम्बाकार आकार वाली एक पंक्तिबद्ध नहर के रूप में डिज़ाइन किया गया है। नहर की अधिकतम वहन क्षमता 180.30 क्यूमेक है जिसमें तल की चौड़ाई के 20.40 मीटर और शीर्ष तक पहुंचने में 5 मीटर पूर्ण आपूर्ति गहराई के संबंधित क्रॉस सेक्शन है। नहर ज्यादातर कृषि क्षेत्रों से होकर गुजरती है।

सिंचाई, घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति के कारण लिंक परियोजना से प्रति वर्ष प्रत्यक्ष लाभ 940 करोड़ रुपये होने का अनुमान है। वर्ष 2003-04 के मूल्य स्तर पर लिंक नहर की पूंजीगत लागत 2673 करोड़ रुपये होने का अनुमान है। परियोजना की वार्षिक लागत 299 करोड़ रुपये है। लाभ लागत अनुपात 3.14 है। ऊपरी लिंक द्वारा इस लिंक परियोजना के लिए लाए गए जल की विभाजित लागत को पूंजीगत लागत में नहीं जोड़ा जाता है। यदि प्रतिप्रवाह लिंक नहरों से अधिशेष जल को अंतरित करने की लागत पर भी विचार किया जाता है तो बीसी अनुपात में बदलाव हो सकता है।